कुमार जीवन - 30

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सभी ने अपनी-अपनी कमज़ोरियों को सच्चाई से स्पष्ट किया है। उस सच्चाई की मार्क्स तो मिल जायेंगी लेकिन बापदादा देख रहे थे कि अभी तक जबकि अपने संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति नहीं आई है, विश्व परिवर्तक कब बनेंगे! अभी दृष्टा हो, दृष्टि द्वारा देखने वाले दृष्टा, दृष्टि क्यों विचलित करते? **दिव्य नेत्र से देखते हो वा इस चमड़ी के नेत्रों से देखते हो?** दिव्य नेत्र से सदा स्वत: ही दिव्य स्वरूप ही दिखाई देगा। चमड़े की आँखें चमड़े को देखती। **चमड़ी को देखना, चमड़ी का सोचना यह किसका काम है! फ़रिश्तों का? ब्राह्मणों का? स्वराज्य अधिकारियों का? तो ब्राह्मण हो या कौन हो? नाम बोलें क्या? (27-4-1983)**

➢➢ ऐसा क्या करें, जिससे चमड़ी के नेत्र से देखना बंद हो जाए और रूहानी दृष्टि आ जाए ?

➳ _ ➳ बार बार अभ्यास करें...

→ स्वयं को आत्मा देखने का

→ दूसरों को आत्मा देखने का

➳ _ ➳ बाबा की दृष्टि से सब कुछ देखें

➳ _ ➳ सदा स्मृति रखें की

→ यह देह जूठन के जूठन के जूठन के जूठन का भी जूठन है

→ मल और मूत्र के अतिरिक इस देह में और कुछ नहीं है

- यही इस देह की वास्तविकता है
- इस गंदे देह की सिर्फ ऊपर से पैकिंग की गयी है

→ यह देह फटा हुआ कपडा है...

- इसे सिलने के लिए जहाँ से सुई डालोगे... वहा से यह और फटेगा

→ यह फटा हुआ कागज़ है

- और दुर्गन्ध वाले पानी से गीला किया गया है

→ इस देह को जला दिया जाएगा... दफना दिया जाएगा

→ यह संसार सिर्फ देह का विस्तार है

- यह **दूरबीन आँखों का विस्तार है**
- यह **बन्दूक आँखों का विस्तार है**

➳ _ ➳ यह देह मिटटी है

→ और इसे मिटटी में ही मिल जाना है

➳ _ ➳ मृत्यु से पहले ही, मृत्यु का अनुभव कर लें

→ ध्यान और मृत्यु में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है

- जो घटना मृत्यु में घटित होती है, वही घटना ध्यान में घटित होती है

→ यही मरजीवा स्थिति है

- यही **जीवंत मृत्यु** है ... **Dying Alive**

➳ _ ➳ अगर शरीर बीमार हो जाये तो यह अनुभव करें की

→ यह शरीर बीमार हुआ है

- मैं आत्मा तो सम्पूरण रूप से स्वस्थ हूँ
- स्वयं को इस देह से अलग कर लें

➳ _ ➳ शरीर के सभी सुखों और दुखों से स्वयं को अलग अनुभव करना

➳ _ ➳ देह को सिर्फ एक दृश्य की तरह देखिये

→ जैसे संसार को एक दृश्य की तरह देखते हैं

➢➢ देह के सुख और आत्मा के सुख में अंतर

➳ _ ➳ देह का सुख आत्मा की शक्ति को नष्ट करता है

→ आत्मा का सुख आत्मा की शक्ति को बढाता है

➳ _ ➳ देह का सुख बाद में दुःख में परिवर्तित हो जाता है

→ आत्मा का सुख, सदैव सुख ही रहता है

➳ _ ➳ देह के सुख में कभी भी तृप्ति का अनुभव नहीं होता

→ आत्मा के सुख से आत्मा तृप्त अवस्था का अनुभव करती है

➳ _ ➳ देह का सुख शनिक है

→ आत्मा का सुख अविनाशी है... लम्बे समय तक टिकता है

➳ _ ➳ देह का सुख भ्रान्ति है

→ आत्मा का सुख सत्य है

➳ _ ➳ देह का सुख पश्चाताप का अनुभव करवाता है

→ आत्मा का सुख अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करवाता है